

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ धूं धूं मृत्युधूमं ॐ धूं धूं कार्धूमं ॐ धूं
 धूं धूमवारही हूं फट् मम शत्रु नृशुमुकस्य मारय २ छेदय २ संहा
 रय २ उच्चातय २ चातय २ विध्वंशय २ शस्त्रेण घाटय २ हूं फट् ॐ धूं धूं
 धूं धूमवारही स्वाहा ॥ ॥ धुमाचौ रासी मंत्र ॥ ॥ नमस्ते धूमवारही वैरि
 प्राणापहारिणी ॥ गोकर्णे मृगशार्दूलो गजकर्णे यथाहरी ॥ पिव

289
 Dhumavati
 Sahasranāma

आशा प्रामाण्य	1884	2
ASHA PRAMANYA		

रक्तंचदेवेक्षित्यस्मिमांसचभक्षय॥ पशुन्ददातिमेशत्रुर्वन्दितांधू
मरूपिनी॥१॥

— गेष्वागताधूमावती श्रीतारिणी त्वयं॥ तस्यागमनाविष्कारकलो
लितत्रयं॥१०॥ श्रीवन्दौवाच॥ ॥ अणुपन्नगनाथस्त्वं किंरूपं ध्या
नमाचरेत्॥ किंमंत्रं पूजयेद्देवी वदामिनाथसत्वरं॥११॥ विनायोगं
विना ध्यानं विनामंत्रं विनारूपं॥ विनावलिंदिनाहोमं विना पूजा वि
ना जपं॥१२॥ मिथुसिद्धिदयाग्रस्य कथंकस्य भुजंगव॥ श्रीभुजंगोवा

१
व॥ ॥ ॐ नमः श्री भूमावती सहस्रनामस्तोत्रस्य प्रचंड महाकालाक्षोभ्य
अथिउस्मिक्क न्द श्री भूमावती देवता धूँवी जं धाँ शक्ति धौँ कालकं वज्रा ॥१॥
स्रप्रहरण्ये विनियोगः ॥ ॥ ध्यान ॥ विवर्णं वं वला दुष्का दीर्घा च मलिना
म्वराः विमुक्तकुन्तला रुस्या विधवा विरलद्विजा ॥ काकध्वजरथा रुढा
विलंबितपयोधरा ॥ सूर्य कूर्कातिरुस्मात्पा धूतहस्तावराचिता ॥ प्रवुड

रा
स
पोनासिकया ॥ दशाकुतिलाकुति लेशनासुत्पिपाशार्दितानित्यं भयदाकलहा
स्यदा ॥ ॥ यथाकाली तथा भूमा भविष्यंति न संसय ॥ ॐ काकध्वजमहापाद
सुकमुखा मृदुनादिनी ॥ उन्मत्तभैरवो लिंग गुह्यकाली मौषधं गुल्मघुंड
महाकाल संयुक्ता स्त्रिकृतालय ॥ दशहस्ताग्निदास्याय वज्रवानं ववामध
क् ॥ हरितामूरनागादि यक्षकिन्नरत्रासिता ॥ भूतवेतालदाकिण्याशि

वाग्दपि शाविका ॥ स्वानौ नूराक्षसी जस्य परिवारगणौ सहः ॥ स य
 श्चिन्नशिरोमाला गुंजपन्नगभूषण ॥ समानदक्षिणाग्निव मध्यवि
 नुसुप्तस्थितः ॥ एवं संविनयधूमा योनिमुद्रां प्रनम्य हं ॥ नाम ॥ ॥ २ ॥
 धूँधूँधूँ मकलाकाली धाँधी वीजकलावती ॥ धूमा रामा कलाङ्गी धूमा
 नी धूमनादिनी ॥ ५ ॥ धूमावती धूमलया धूमकेतुधरायनी ॥ धूरावता

धराकान्ता धुमनन्दाधनागमी ॥ ६ ॥ धराधरधरेन्दुनी धराधरधरेश्वरी ॥ धरेश्व
 री धराधात्री धरनी धर्मधारिणी ॥ ७ ॥ धरावसुन्धराधन्वी धनधारी धनेश्वरी ॥
 धनमान्वी धनागमी धनधाम्नी धनायनी ॥ ८ ॥ धवला धवलप्रीता धवला धव
 लेश्वरी ॥ धवलारनगामी च धवलारननायनी ॥ ९ ॥ धवलेशी धवलगा ध
 वलामदनायनी ॥ धक्कनादवलङ्गला धक्कनादमहागमी ॥ १० ॥ धर्मी

नानिकरीधन्या धर्मकारीधराधरी॥धर्मावतीधर्मवती-धर्माधर्मप्रता-
पिणी॥११॥धर्मकामार्थसिद्धाव-धर्ममाताधनेश्वरी॥धर्मिनीधामिनीधूमा
-धमिनीधूमकारिनी॥१२॥धनुर्द्धरीधकारंगी-धनुदन्त्रीधनावती॥धनुर्वद्रा ॥३॥
वतीध्यानी-धनुमाताधनुर्द्धरी॥१३॥धनुकर्त्रिधरीविद्मधनुस्वर्वांगधारि
णी॥धनुर्वज्रावतीवज्री-धनुर्वाणाम्कुशायनी॥धनुर्वज्रातिशयंगी-धनुर्व

जुधरायणी॥धनुनाथाधनाधीश-धनमानीधनःप्रभुःप्रभुः॥१४॥धनानी
धनमान्यानि-धनगामीधनान्तकी॥धन्याधन्यवतीधन्या-धन्यसर्वांगमेश्वरी
॥१५॥धनशीलगुणागमिधनशीलगुणालय॥धनशीलधरीधन्त्रीधनशी
लावतारिणी॥१६॥धनशीलगुणोपेता-धनशीलगुणोज्ज्वला॥धनशीललया
नित्यं-धनशीललयेश्वरी॥१७॥धनशीलमहानाम्नी-धनशीलमहातपा॥धा

न्याधानधननारी धारिणी विसृता रिणी ॥ १९ ॥ धाता विधा विविधा धारा
 धीरतपस्वानी ॥ धार्मिका धार्मिक धर्म धार्मिक साधक कृति ॥ २० ॥ धारक
 विलदात्री च धारणां दित्यपदिनी ॥ धामिनी धम पूजा च धामि धामा धन ॥ २१ ॥
 प्रभुः ॥ २१ ॥ धांकार धामकारी च धां धिं धूं धैं स्वरूपिणी ॥ धारिणी धीरयंत्री
 च धारिणी धर्मकारिणी ॥ २२ ॥ धारिणी वज्रवानास्त्र धारिणी धनुःशायिनी

धारिणी दैमस्तानी धारिणी रिपुहा रिणी ॥ २३ ॥ धिरवती धारवती धिराणी
 धिंधिरि श्वरी ॥ धीरविद्या धीरतनू धीरधीरतपस्वानी ॥ २४ ॥ धीर्धा वना धीर
 गती धीवरी चर्मकारिणी ॥ धीवरी नैर्धं कर्ता च धवरी धर्म धारिणी ॥ २५ ॥
 ॥ धीरधारी धीरगती धीरमंत्रप्रदायीनी ॥ धीरंगी धीवरी कन्या धीरंगी
 रक्तलोचनी ॥ २६ ॥ धीरोजयोक्तवादी च धीरनीति धरायनी ॥ धीरयंत्राधी

रगम्भाधीर्यधारनेगायनी ॥ १७ ॥ धुमावती धूमवती धूमवर्णागवज्रिणी ॥ धू
 मप्रभाधूमनेत्रा धूमजिह्वाकरालिनी ॥ १८ ॥ धूमाग्निमध्यासंदिप्री धूमाग्नि
 मध्यसंदिप्री धूमाग्निविन्दुरूपिणी ॥ धूमाग्निगामिधुमाधूमाग्निप्रेमका ॥ १९ ॥
 रिणी ॥ २० ॥ धूमाग्निप्रेमसंतुष्टा धूमाग्निप्रेमभूषणा ॥ धूमप्रभाधूमवर्णा
 धूमवर्णाविविचिता ॥ २१ ॥ धूमप्रियाधूमगति धूमप्रीतिमनोज्वला ॥

धूमकलोलधूमांगी धूमधूंकारधूर्जदी ॥ २२ ॥ धूरायनी धूरयनी धूरानीधू
 धिकारिणी ॥ धेयानीर्ययनाम्नी च धेयवक्रनिवाशिनी ॥ २३ ॥ धेयानना धे
 यरूपा धेया धेयस्वरूपिणी ॥ २४ ॥ धेयाननामहाविद्या धेययन्त्रनिवाशिनी ॥
 धेयकान्तिधेयधानी धेयमानर्ययानिका ॥ २५ ॥ धैर्जदाधारिणी धैर्यी धैर्य
 रूपावधैर्यधक ॥ धैर्यदक्षलताग्रेव धैर्यदक्षलतास्त्रिय ॥ २६ ॥ धैर्यधा

दरुणनेत्राव धनदारुणकामिनी ॥ धनारुणानिधमनी धनारुणानिम
र्तकी ॥ ४४ ॥ धरी धरनेधारीव धरीधरनेधारिणी ॥ धरीधरनेकर्त्रीव धरीध
रणधारिका ॥ ४५ ॥ धूमवानधरादौडी धूमवानास्त्रधारिणी ॥ धूमवानम ॥ ७॥
हृदेवी धूमवानेप्रहारिणी ॥ ४६ ॥ धूमवानाग्निहस्ताव धूमवानेप्रकाशि
णी ॥ धूमवानेप्रहारी व धूमवानेप्रतापिनी ॥ ४७ ॥ धूमवानधराधात्री धू
म

धूमवानायनीप्रिया ॥ धूमवानेप्रियानन्दा धूमवानेप्रियागती ॥ ४८ ॥ धूमवानेस
दाप्रती धूमवानेसदाप्रिया ॥ धूमवानेसदातुका धूमवानोतिनादि
नी ॥ ४९ ॥ धूमप्रभाधूमकान्ति धूमप्राप्तिप्रियारती ॥ धूमाहनेमहानेत्रा धू
मारुणमहातया ॥ ५० ॥ धूंकारशब्दकल्लोला धूंकारशब्दत्राशिता ॥ धूंका
रप्राणहर्त्रीग्नि धूंकार्यताहारिणी ॥ ५१ ॥ धूंकारवानेवज्राग्नि धूंकारक

गशब्दिता ॥ धूंकार धूंधिराजाव धूं धूं धूंकारनादिनी ॥ ५२ ॥ धूंकार प्रेम
 कारिव धूंकार प्रेमधारिणी ॥ धूंकार रणनादाद्या धूंकार दानवल्लभा ॥
 ५३ ॥ धूंकार कालिका तारा धूंकार सुविधारिणी ॥ धूंकार शब्दकरनी धूं
 कार शब्द तोषिणी ॥ ५४ ॥ धूंकार शक्तिनिलया धूंकार शक्तिधारिणी धूं
 धूंकार शब्द संस्थिता ॥ ५५ ॥ धूंकार विन्ननिलया धूंकार विन्नहारि ॥ ५६ ॥

कास्माद्वसंस्थाना

१ धूंकारचित्तगंधित-१
५६

रणी॥ धूंकारवित्रतल्यस्थाः धूंकारवज्रहस्तावः॥ धूंकारवज्रनादिनी धूंकारवज्र
 दिप्रांगी धूंकारवज्रविता॥ ५७॥ धूमभक्ता धूमकर्ता धूमस्मनेतो
 विता॥ धूमातरंगिनी स्यामा धूमातरंगधारिणी॥ ५८॥ धूमातरंगगा
 मीव धूमातरंगनादिनी॥ धूमातरंगणारणी धूमातरंगतारिणी॥
 ५९॥ धूमातरंगमत्तार धूमातरंगमात्रिका॥ धूमातरंगतरुणी धूमातरं

गहासिनी ॥६०॥ धूमातरंग दमनी-धूमातरंगरंगिनी ॥ धूमातरंगिनी रा
मा-धूमातरंग त्यामला ॥६१॥ धूमातरंग गामी च-धूमातरंग वाहिणी ॥२॥
॥ धूमाकुरंग नयनी-धूमाकुरंग लोचनी ॥६२॥ धूमातारुण कल्याणी ॥२॥
धूमातारुण कल्पिनी-धूमातारुण पद्माक्षी-धूमातारुण पद्मिनी ॥६३॥
धूमातारुण रत्नांगी-धूमातारुण कारिणी ॥ धूमातारुण लोलांगी-धूमा

तारुण काकिनी ॥६४॥ धूमातारुण तारुण्या-धूमातारुण तारिणी ॥ धूमातारु
ण तारिण्या-धूमातारुण कोमला ॥६५॥ धूमातारुण तारा च-धूमातारुण
शंकरी ॥ धूमातारुण गरिका-धूमातारुण तारिका ॥६६॥ धूमातारुण तारा च
धूमातारुण मोहिनी ॥ धूमातारुण तारैश्व-धूमातारुण संकरी ॥६७॥ धूमा
कैलाशारी च-धूमाकमल वल्लभा ॥ धूमाकमल पत्राक्षी-धूमाकमल हंसिनी

धूमाकमलतारंगी-धूमाकमलशारदा॥६२॥ धूमाकमलरक्तोंगी-धू
 माकमलसुन्दरी॥ धूमाकमलनीलांगी-धूमाकमलधारिणी॥७०॥ धूमा
 मोहविशालाक्षी-धूमा मोहनिद्राकरी॥ धूमा मोहिनिविद्याता-धूमा मो॥१०॥
 हसदरती॥७१॥ धूमा सरणशङ्कर धूमा सरणशंखिनी॥ धूमा सरणसा
 वित्री-धूमा सरणसौभवी॥७२॥ धूमतात धूमकाली-धूमछिन्नाचकुलु

का॥ धूममेकजटावन्दु-धूमसूर्याग्नितालुका॥७३॥ धूमसूर्या नलंसो
 म-धूमभैरवभैरवी॥ धूमसिद्धिधूमवृद्धि-धूमसिद्धिविनायका॥७४॥
 धूमकोमारवदुक-धूमकुञ्जामहेश्वरी॥ धूमकुञ्जामहाकाली-धूमकुञ्जा
 करालिनी॥७५॥ धूमकुञ्जा विशालाक्षी-धूमकुञ्जा विसारदा॥ धूमकु
 ञ्जामहागौरी-धूमकुञ्जामहातपा॥७६॥ धूमकंपसदातप्ता-धूमकंप

विहारदा॥ धूमकंयसदातुसा॥ धूमकंय^सदारती॥ ७७॥ धूमसंभुसदारत्पा॥ धू
मगंगासरत्ती॥ धूमाउमापार्वतीव॥ धूमाउमामहेश्वरी॥ ७८॥ धूमाउ
माउडासीव॥ धूमाउमानिशावरी॥ धूमाउमामङ्गीव॥ धूमाउमाकपालि ॥ ७९॥
नी॥ ८०॥ धूमाउग्रकपर्दीव॥ धूमाउग्रकरालिका॥ धूमाउग्रतहनीव॥ धू
माउग्रकर्लकीनी॥ ८१॥ धूमाउग्रकपालीव॥ धूमाउग्र

माउ

१२

त्रिशङ्काव-धूमा उग्रभयंकरी ॥ ८० ॥ धूमरत्नविचित्रांगी-धूमरत्नविभूष
ना ॥ धूमरत्नेश्वमाया-धूमरत्नांगरप्रिया ॥ ८१ ॥ धूमछत्रेश्वरीदेवी धू
मछत्राह्वयप्रिया ॥ धूमछत्रसदाप्रीति-धूमछत्रप्रदिप्तिता ॥ ८२ ॥ धूमा
स्मसानभस्मांगी धूमास्मानवासिणी ॥ धूमास्मसानमध्यास्था-धूमास्मसा
नकिनी ॥ ८३ ॥ धूमास्मसानकालीव धूमास्मसानभैरवी ॥ धूमास्मसान

का

इम २

सारंगी. धूमास्मसानडाकिनी॥८५॥ धूमास्मसानकालाशा. धूमास्मसान
 सुन्दरी॥ धूमास्मसानप्रेताया. धूमास्मसानगरिनी॥८६॥ धूमास्मसा
 नतरुणी. धूमास्मसाननायिका॥ धूमास्मसानशक्तिश्व. धूमास्मसान॥९२॥
 संकरी॥८७॥ धूमास्मसानमातंगी. धूमास्मसानजुबुकी॥ धूमास्मसा
 नवांडाली. धूमास्मसानसांभवी॥८८॥ धूमाप्रवणरूपाव. धूमाप्र

वणकालिका॥ धूमाप्रवंडकालीव. धूमाप्रवंडवंदिका॥८९॥ धूमाप्रव
 णतासैगौ. धूमाप्रवणतारिणी॥ धूमाप्रवणवेताल. धूमाप्रवणभैर
 वी॥९०॥ धूमाप्रवणतरुणी. धूमाप्रवणसुन्दरी॥ धूमाप्रवंडदुर्गासा
 धूमाप्रवंडमात्रिका॥९१॥ धूमाप्रवंडकामाक्षा. धूमाप्रवंडकामिनी॥ धू
 माप्रवंडरूपासा. धूमाप्रवंडनायिका॥९२॥ धूमाप्रवणवरुणीगी. धूमः

प्रवरण्ड शकिणी ॥ धूमः प्रवंड कंका ली ॥ धूमः प्रवरण्ड स्या मला ॥ २३ ॥ धूमः प्र
 वंड मत्तु ग्रा ॥ धूमः प्रवं दनादिनी ॥ धूमः प्रवंड सावेगा ॥ धूमः प्रवंड साशिनी ॥
 २४ ॥ धूमा धूम महा नादा ॥ धूमा धूम विमारदा ॥ धूमा धूम कराला स्या ॥ धू ॥ २५ ॥
 मा धूम कपदिणी ॥ २५ ॥ धूमा धूम मदा श्री व ॥ धूमा धूम दारसा ॥ धूमा धूम म
 तंगा सी ॥ धूमा धूम विशारदा ॥ २६ ॥ धूमा धूम महा तत्रा ॥ धूमा धूम महा व
 सर

ला ॥ धूमा धूम महा ज्वाला ॥ धूमा धूम महा कला ॥ २७ ॥ धूमा धूम कला कान्ती
 धूमा धूम कला वती ॥ धूमा धूम महा मत्रा ॥ धूमा धूम महारता ॥ २८ ॥ धूमा धूम
 विलिप्तौ गी ॥ धूमा धूम मदारति ॥ धूमा धूम वती देवी ॥ धूमा त्रिभुवनेश्वरी ॥ २९
 ॥ धूमा भुवन माता व ॥ धूमा भुवन मोहिनी ॥ १०० ॥ ध्रुवं सुनिश्चलं सान्ते ध्रु
 वं सुनिश्चलात्मिका ॥ ध्रुवं सुनिश्चलात्मा व ॥ ध्रुवं सुनिश्चलां जने ॥ १०१ ॥ ध्रुवं

सुनिश्चलाज्ञानं ध्रुवं सुनिश्चलाश्रयः॥ ध्रुवं सुनिश्चलारत्नं ध्रुवं सुनि
 श्चलागतिः॥ १०२॥ ध्रुवं सुनिश्चलासुभा ध्रुवं सुनिश्चलारतिः॥ ध्रुवं सु
 निश्चलारत्ना ध्रुवं सुनिश्चलाप्रियः॥ १०३॥ ध्रुवात्मिका ध्रुवारोधो ध्रुवो ॥ १०४॥
 गा ध्रुवतानूका॥ ध्रुवागगनमध्यस्था ध्रुवपुराणात्मिका बला॥ १०५॥ ध्रुवं
 धारा ध्रुवाराधा ध्रुवासारंगिनी जया॥ ध्रुवचूडामणी दिव्या ध्रुवधूमा

वती गती॥ १०५॥ ध्रुवो ध्रुवकारसद्वर्धनो ध्रुवः सर्वत्रासिनी॥ ध्रुवध्रुवध्रुवध्रुव
 रणास्त्रं ध्रुवध्रुवकावगारिणी॥ १०६॥ नधूमा सदृशी अस्त्रं नधूमा सदृशी त
 पः॥ नधूमा सदृशी खड्गं नधूमा सदृशी रसा॥ १०७॥ धूमादिन्ना उग्रतार
 कुलकावगला मुखी॥ काली करी पिशाची पूर्णभुवन कामिनी॥ १०८॥
 इति श्री दिव्यसागराग्रधूमानामसहस्री कंपठितयं त्रिशंध्यं च सर्वश

वृषवर्णिता ॥१०२॥ इति श्री वैलोक्यमोहिनीयामरेतन्द्राक्षोभ्यसम्पादे श्री
 श्री श्री धर्मावती सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तः ॥ ॥ ध्यायेत्कालाभुनीलां विः
 लिखितवदनांकाकनाराविकरिणं संमार्जन्युत्कृष्टपैर्युतसूसकरां ॥१०५॥
 वक्रदराद्यविद्यास्यं ॥ अष्टाविर्वागावेषां भ्रुकूटितनयनां मुक्तके
 शां मुदारां शुष्कोत्तुंगातिः तिर्यक्स्तनभरयुगलां निष्कृपां शत्रूहं त्रीं ॥